2. **मूल्यों और विश्वासों का निर्माण:** एक किशोर जो समाज सेवा में रुचि रखता है और समाज के प्रति जिम्मेदारी महसूस करता है, वह अपने जीवन के उद्देश्य को समझ पाता है। उसे यह एहसास होता है कि उसका जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि समाज के लिए भी मूल्यवान है, जिससे उसकी पहचान मजबूत होती है।

3. **मित्रता और सामाजिक समूह:** एक किशोर जो अपने दोस्तों के साथ सकारात्मक संबंध बनाता है और जिनके साथ उसके मूल्यों और विचारों में समानता होती है, वह अपनी पहचान को लेकर आत्म–विश्वास महसूस करता है। यह सामाजिक समर्थन उसे आत्म–सुरक्षा और स्थिरता की भावना देता है।

4. **शैक्षणिक और पेशेवर मार्गदर्शन:** यदि किशोर को करियर काउंसलिंग मिलती है और उसे अपने करियर के विभिन्न विकल्पों के बारे में मार्गदर्शन मिलता है, तो वह अपने भविष्य को लेकर आत्म–विश्वास और प्रेरित महसूस करता है। यह मार्गदर्शन उसे अपने करियर की दिशा में स्पष्टता और आत्म–सुरक्षा की भावना देता है।

नकारात्मक उदाहरण (Negative Examples)

1. **सामाजिक दबाव और पहचान संकट:** एक किशोर जो अपने साथियों के दबाव में अपनी रुचियों को दबा देता है और उनके अनुसार व्यवहार करता है, वह अपनी असली पहचान को खो सकता है। यह अनुभव उसे भ्रमित और असुरक्षित महसूस करा सकता है, जिससे वह अपने उद्देश्य को समझने में असमर्थ हो सकता है।

2. **माता–पिता या समाज का असमर्थन:** यदि एक किशोर को उसके परिवार या समाज से समर्थन नहीं मिलता और उसे अपने जीवन के बारे में निर्णय लेने का अवसर नहीं दिया जाता, तो वह अपने भविष्य और पहचान को लेकर असमंजस में रहता है। इससे वह अपना आत्म–सम्मान खो सकता है और भूमिका भ्रम का अनुभव कर सकता है।

3. **शैक्षणिक असफलता और आत्म–संदेह:** एक किशोर जो पढ़ाई में कठिनाई महसूस करता है और उसे अपने शिक्षकों या माता–पिता से नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है, वह खुद पर संदेह करने लगता है। इससे उसका आत्म–विश्वास कमजोर होता है और वह अपनी पहचान और भविष्य के उद्देश्य को लेकर भ्रमित रहता है।

4. **सही मार्गदर्शन की कमी:** एक किशोर जिसे अपने करियर और जीवन के निर्णयों के बारे में मार्गदर्शन नहीं मिलता, वह अपने भविष्य को लेकर संकोच और भ्रमित महसूस करता है। यह अनुभव उसे असुरक्षित बना सकता है और वह समाज में अपनी भूमिका को लेकर स्पष्टता नहीं प्राप्त कर पाता।

इस चरण के दीर्घकालिक प्रभाव

सकारात्मक अनुभव: यदि किशोर को इस चरण में मार्गदर्शन और समर्थन मिलता है, तो वह अपनी पहचान, आत्म–सुरक्षा, और स्थिरता की भावना प्राप्त करता है। इससे वह एक आत्म–विश्वासी, उद्देश्यपूर्ण और स्थिर व्यक्ति बनता है, जो जीवन में अपने करियर और व्यक्तिगत संबंधों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है।

नकारात्मक अनुभव: यदि किशोर को अपने उद्देश्य और पहचान को समझने में असमर्थता का सामना करना पड़ता है, तो वह पहचान संकट और भूमिका भ्रम का अनुभव करता है। इससे वह जीवन में अनिश्चितता, असमंजस, और आत्म–संदेह का अनुभव कर सकता है, जो उसके करियर, रिश्तों, और समाज में उसकी भूमिका पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

6. सन्निकटता बनाम एकाकीपन (Intimacy vs. Isolation)

जो 18 से 40 वर्ष की आयु के बीच आता है। इस चरण में व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य अपने जीवन में गहरे, घनिष्ठ और दीर्घकालिक संबंधों का निर्माण करना होता है। यह समय है जब व्यक्ति दीर्घकालिक मित्रता, प्रेम, और संबंधों के माध्यम से भावनात्मक संतुलन और स्थायित्व प्राप्त करना चाहता है।यदि व्यक्ति सफलतापूर्वक सन्निकटता या घनिष्ठता का अनुभव करता है और घनिष्ठ संबंध बनाता है, तो वह आत्मीयता, स्थायित्व और संतोष की भावना का अनुभव करता है। लेकिन अगर वह घनिष्ठ संबंध बनाने में असफल रहता है या अकेलापन महसूस करता है, तो वह समाज में अलग-थलग महसूस करता है, और उसमें एकाकीपन की भावना विकसित हो सकती है।

आयु: 18 से 40 वर्ष तक

संकट का विवरण: इस चरण में व्यक्ति गहरे और दीर्घकालिक संबंधों का निर्माण करना चाहता है। वह यह अनुभव करना चाहता है कि उसके जीवन में कोई है जो उसे समझता है, समर्थन करता है और उसके साथ स्थायित्व का अनुभव करता है।

उद्देश्य: इस चरण का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति में सन्निकटता या आत्मीयता की भावना का विकास हो ताकि वह स्थिर और प्रेमपूर्ण संबंध बना सके।

सकारात्मक परिणाम: यदि व्यक्ति सफलतापूर्वक घनिष्ठ संबंध बनाता है, तो वह आत्मीयता, स्थायित्व, और संतोष का अनुभव करता है।

नकारात्मक परिणाम: यदि व्यक्ति घनिष्ठ संबंध बनाने में असफल रहता है, तो वह अकेलापन और समाज से अलगाव की भावना महसूस कर सकता है।

सकारात्मक उदाहरण (Positive Examples)

1. **दीर्घकालिक रिश्ते का निर्माण:** एक व्यक्ति जो एक स्थायी प्रेम संबंध में है और अपने साथी के साथ गहरे भावनात्मक जुड़ाव का अनुभव करता है, वह आत्मीयता और स्थायित्व का अनुभव करता है। यह सकारात्मक अनुभव उसे अपने साथी पर विश्वास करने और एक स्थिर जीवन बनाने में मदद करता है।

2. **सच्ची मित्रता का विकास:** एक व्यक्ति जो कुछ करीबी दोस्तों के साथ गहरे और स्थायी संबंध विकसित करता है और कठिन समय में उनके साथ अपने भावनाओं को साझा कर सकता है, वह भावनात्मक समर्थन और आत्म–संरक्षण का अनुभव करता है। यह अनुभव उसे समाज में आत्मीयता और संतोष महसूस करने में मदद करता है।

3. **सामाजिक समूह का हिस्सा बनना:** एक व्यक्ति जो एक सामाजिक समूह का हिस्सा बनता है, जैसे क्लब, टीम, या धर्म–समाज, जहाँ वह गहरे संबंध बना सकता है, उसे एक मजबूत समर्थन प्रणाली मिलती है। यह समूह उसे अकेलापन महसूस करने से बचाता है और उसे समाज में अपनी पहचान और महत्व का एहसास कराता है।

4. **पारिवारिक संबंधों का पोषण:** एक व्यक्ति जो अपने परिवार के साथ गहरे संबंध बनाता है और नियमित रूप से अपने माता–पिता, भाई–बहन, और अन्य रिश्तेदारों के साथ संपर्क बनाए रखता है, वह भावनात्मक स्थिरता का अनुभव करता है। यह उसे परिवार के प्रति अपने दायित्व और समर्थन की भावना देता है, जिससे उसे सुरक्षा और संतोष की अनुभूति होती है।

नकारात्मक उदाहरण (Negative Examples)

1. **भावनात्मक जुड़ाव में असफलता:** एक व्यक्ति जो किसी के साथ दीर्घकालिक संबंध नहीं बना पाता और केवल अल्पकालिक रिश्तों में ही रुचि रखता है, वह गहरे भावनात्मक जुड़ाव का अनुभव नहीं कर पाता। यह उसे अकेलापन और समाज से अलगाव की भावना महसूस करा सकता है।

2. **सामाजिक समूहों से दूरी:** अगर एक व्यक्ति किसी सामाजिक समूह या समुदाय में शामिल नहीं होता और खुद को दूसरों से दूर रखता है, तो वह एकाकीपन का अनुभव करता है। यह उसे भावनात्मक रूप से अलग–थलग कर सकता है और उसके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

3. **पिछले रिश्तों का नकारात्मक अनुभव:** यदि एक व्यक्ति को अपने पिछले संबंधों में निराशा या असफलता का अनुभव हुआ है और वह भविष्य में नए रिश्ते बनाने से डरता है, तो वह आत्मीयता और सन्निकटता से दूर रहता है। यह अनुभव उसे भावनात्मक रूप से कमजोर बना सकता है और वह समाज में अलग–थलग महसूस कर सकता है।

4. काम पर अत्यधिक ध्यान देना: एक व्यक्ति जो अपने काम में बहुत अधिक व्यस्त रहता है और व्यक्तिगत संबंधों पर ध्यान नहीं देता, वह अपने जीवन में गहरे भावनात्मक संबंध नहीं बना पाता। यह उसे सामाजिक रूप से अलग–थलग कर सकता है और भावनात्मक समर्थन की कमी का अनुभव करा सकता है।

दीर्घकालिक प्रभावसकारात्मक अनुभव: यदि व्यक्ति सफलतापूर्वक गहरे और घनिष्ठ संबंध बनाता है, तो वह जीवन में आत्मीयता, स्थायित्व, और संतोष की भावना महसूस करता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में भावनात्मक संतुलन बनाए रखते हैं और मानसिक रूप से मजबूत रहते हैं। इससे उनका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर रहता है और वे समाज में एक सुरक्षित और स्थिर जीवन जीने में सक्षम होते हैं।

नकारात्मक अनुभव: यदि व्यक्ति घनिष्ठ संबंध बनाने में असफल रहता है या समाज से खुद को अलग–थलग कर लेता है, तो वह एकाकीपन और उदासी महसूस करता है। इस तरह के व्यक्ति में अकेलापन और अलगाव की भावना बढ़ सकती है, जिससे उसका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है और वह समाज में अलग–थलग महसूस कर सकता है। इससे उसके जीवन में भावनात्मक असंतुलन और तनाव उत्पन्न हो सकता है।इस प्रकार, सन्निकटता बनाम एकाकीपन का यह चरण व्यक्ति के भावनात्मक और सामाजिक संतुलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सकारात्मक अनुभव व्यक्ति को आत्मीयता, संतोष, और स्थायित्व का अनुभव कराते हैं, जबकि नकारात्मक अनुभव उसे अकेलापन, उदासी, और समाज से अलगाव की ओर ले जा सकते हैं।

7. सृजनशीलता बनाम स्थिरता (Generativity vs. Stagnation)

40 से 65 वर्ष की आयु के बीच आता है। इस चरण में व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य अपने जीवन के अनुभवों, कौशल और ज्ञान का उपयोग समाज और अगली पीढ़ी के विकास में योगदान करने में होता है। इस दौरान लोग समाज और अपने परिवार के प्रति योगदान देने का प्रयास करते हैं, जैसे बच्चों का पालन–पोषण, सामुदायिक सेवा, करियर में प्रगति, और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास। यदि व्यक्ति सफलतापूर्वक समाज और दूसरों के लिए योगदान दे पाता है, तो वह सृजनशीलता, उद्देश्य और संतोष की भावना का अनुभव करता है। इसके विपरीत, यदि व्यक्ति समाज के प्रति उदासीन रहता है या केवल अपने लिए सोचता है, तो उसमें स्थिरता और जीवन के प्रति असंतोष की भावना उत्पन्न हो सकती है।

आयु: 40 से 65 वर्ष तक

संकट का विवरण: इस चरण में व्यक्ति अपने जीवन का मूल्यांकन करता है कि वह समाज और अगली पीढ़ी के लिए क्या योगदान कर रहा है। यह समय बच्चों की परवरिश, सामुदायिक सेवा, और करियर में प्रगति करने का होता है।

उद्देश्य: इस चरण का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति समाज के प्रति जिम्मेदारी, सृजनशीलता, और योगदान की भावना महसूस करे। यह समाज के प्रति सकारात्मक बदलाव लाने और दूसरों की मदद करने की भावना को प्रोत्साहित करता है।

सकारात्मक परिणाम: यदि व्यक्ति समाज में योगदान देता है और अपनी मेहनत से दूसरों की मदद करता है, तो उसमें उद्देश्य, संतोष और सृजनशीलता की भावना उत्पन्न होती है।

नकारात्मक परिणाम: यदि व्यक्ति समाज के प्रति उदासीन रहता है और किसी प्रकार का योगदान नहीं देता, तो उसमें स्थिरता और असंतोष की भावना उत्पन्न होती है।

सकारात्मक उदाहरण (Positive Examples)

1. **बच्चों की परवरिश:** एक माता-पिता जो अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, संस्कार, और जीवन मूल्य सिखाते हैं, वे अगली पीढ़ी के विकास में योगदान कर रहे होते हैं। यह उन्हें सृजनशीलता और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना देता है, और वे अपने जीवन को मूल्यवान महसूस करते हैं।

2. **सामुदायिक सेवा:** एक व्यक्ति जो समय निकालकर सामुदायिक सेवा करता है, जैसे गरीबों की मदद करना या समाज के जरूरतमंद लोगों के लिए कार्य करना, उसे अपने जीवन में उद्देश्य और संतोष का अनुभव होता है। यह अनुभव उसे सृजनशीलता और समाज के प्रति जिम्मेदारी का एहसास दिलाता है।

3. **प्रोफेशनल मेंटरशिप:** एक व्यक्ति जो अपने कार्यक्षेत्र में नए लोगों को प्रशिक्षित करता है और उनका मार्गदर्शन करता है, वह अपने अनुभव और ज्ञान को अगली पीढ़ी के साथ साझा करता है। यह अनुभव उसे सृजनशीलता और उद्देश्य की भावना से भरता है और वह अपने करियर को समाज के लिए मूल्यवान मानता है।

4. **सृजनात्मक योगदान:** एक व्यक्ति जो साहित्य, संगीत, या कला के माध्यम से समाज में अपनी छाप छोड़ता है, उसे अपने जीवन में संतोष और उद्देश्य का अनुभव होता है। उसके सृजनात्मक कार्य दूसरों को प्रेरित करते हैं और वह समाज में सकारात्मक बदलाव लाता है, जिससे उसे सृजनशीलता का एहसास होता है।

नकारात्मक उदाहरण (Negative Examples)

1. **केवल अपने लिए जीना:** एक व्यक्ति जो केवल अपने लिए सोचता है और समाज में योगदान देने के बारे में नहीं सोचता, वह स्थिरता और असंतोष का अनुभव कर सकता है। वह अपने जीवन को अधूरा महसूस कर सकता है और समाज में अपनी भूमिका को महत्वहीन समझ सकता है।

2. **समाज से जुड़ाव की कमी:** यदि कोई व्यक्ति समाज से खुद को अलग कर लेता है और केवल अपनी नौकरी या संपत्ति पर ध्यान देता है, तो वह सृजनशीलता और संतोष की भावना का अनुभव नहीं कर पाता। यह स्थिति उसे जीवन के प्रति उदासीन और असंतुष्ट बना सकती है।

3. **परिवार और बच्चों के प्रति उदासीनता:** यदि एक व्यक्ति अपने परिवार के प्रति उदासीन रहता है और अपने बच्चों की परवरिश में योगदान नहीं देता, तो वह समाज के प्रति जिम्मेदारी की कमी महसूस करता है। इससे उसके जीवन में स्थिरता और असंतोष की भावना बढ़ सकती है।

4. **केवल व्यक्तिगत लाभ पर ध्यान देना:** एक व्यक्ति जो समाज में योगदान देने के बजाय केवल अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए कार्य करता है, वह जीवन में संतोष और सृजनशीलता का अनुभव नहीं कर पाता। यह उसे स्थिरता की ओर ले जा सकता है और वह अपने जीवन को अधूरा महसूस कर सकता है।

दीर्घकालिक प्रभावसकारात्मक अनुभव: यदि व्यक्ति इस चरण में समाज में योगदान देता है और दूसरों की मदद करता है, तो वह अपने जीवन में उद्देश्य, संतोष, और सृजनशीलता की भावना का अनुभव करता है। यह उसे अपने जीवन को मूल्यवान और सार्थक महसूस कराता है, और वह समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करता है।

नकारात्मक अनुभव: यदि व्यक्ति इस चरण में समाज के प्रति उदासीन रहता है और केवल अपने व्यक्तिगत लाभ पर ध्यान देता है, तो वह जीवन में स्थिरता और असंतोष का अनुभव करता है। ऐसे व्यक्ति अपने जीवन को अधूरा महसूस कर सकते हैं और समाज में अपनी भूमिका को महत्वहीन समझ सकते हैं।इस प्रकार, सृजनशीलता बनाम स्थिरता का यह चरण व्यक्ति के जीवन में संतोष, उद्देश्य, और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण होता है। सकारात्मक अनुभव उसे आत्म–विश्वासी, संतुष्ट, और समाज में योगदान देने के लिए प्रेरित करते हैं, जबकि नकारात्मक अनुभव उसे स्थिरता, उदासीनता, और जीवन के प्रति असंतोष की ओर ले जा सकते हैं।